Total No. of Questions - 6] [Total Pages : 3

(2022)

9361

M.A. Examination

SANSKRIT

(वेद)

Paper–V

(Semester-II)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80, Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : सभी प्रश्न कीजिए।

1. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **तीन** की ऋषि, देवता एवं छन्द का निर्देश करते हुए सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) अभि त्वा पूर्वपीतये सृजामि सोम्यं मधु।
मरुद्भिरग्न आ गहि।।

(ख) चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।

(ग) यः सुन्वते पचते दुध्र आ चिद् वाजंदर्दर्षि स किलासि सत्यः।
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम।।

५२१

(घ) वास्तोष्पते शग्मया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।

पाहि क्षेम उत योगे वरं नो यूयं पातस्वस्तिभिः सदा नः।।

(ङ) सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

(च) यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।

सस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

10×3=30

(12×3=36)

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** शब्दों की व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिए–

पीतये, उदगात्, सुवीरासो, वदेम, पात, वृत्वा, विधेम। 4×2½=10

(4×3=12)

3. सूर्यसूक्त के आधार पर सूर्यदेव का वैशिष्ट्य लिखिए।

अथवा

वाक्सूक्त की दार्शनिक दृष्टि से समीक्षा करें। 10(11)

4. किसी **एक** मन्त्र का पद-पाठ लिखिए–

(क) अ॒स्य त्वे॒षा अ॒जरा॑ अ॒स्य मा॒नवः॑ सु॒सं॒दृशः॑ सु॒प्रती॑कस्य सु॒द्युतः॑।

भात्व॑क्षसो॒ अत्य॒क्तुर्न सिन्ध॑वो॒ऽग्ने रै॑जन्ते॒ अस॑सन्तो अ॒जराः॑।।

(ख) उषो॒ वाजे॑न वाजिनि॒ प्रचे॑ताः॒ स्तोमं॑ जुषस्व गृण॒तो म॑घोनि।

पुरा॒णी दै॑वि युव॒तिः पुरै॑धि॒रनु॑ व्र॒तं च॑रसि विश्ववारे।।

10(11)

5. निम्नलिखित मन्त्रों में से किन्हीं **दो** मन्त्रों की स्पष्ट व्याख्या कीजिए–

(क) यस्याश्चतस्रः प्रदिशः पृथिव्या यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
या बिभर्ति बहुधा प्राणदेजद् सा नो भूमिर्गोष्वप्यन्ने दधातु।।

(ख) अग्निर्भूम्यामोषधीष्वग्निमापो बिभ्रत्यग्निरश्मसु।
अग्निरन्तः पुरुषेषु गोष्वश्वेष्वग्नयः।।

(ग) ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो वसन्तः।
ऋतवस्ते वहिता हायनीरहोरात्रे पृथिविनोदुहाताम्।।

(घ) अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्।
अभीषाडस्मि विश्वाषाडाशामाशां विषासहिः।। 2×5=10
(2×7½=15)

6. "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" इस पंक्ति में निहित अभिप्राय को स्पष्ट करें।

अथवा

भूमिसूक्त के आधार पर राष्ट्रीय भावना की ऋषिदृष्ट मन्तव्य स्पष्ट करें। 10(15)
